International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

नौरंगाबाद से प्राप्त कुषाणकालीन मृन्मूर्तियां : एक अध्ययन

सुमन
इतिहास प्राध्यापिका
आरोही मॉडल विद्यालय डुल्ट
फतेहाबाद

शोध सार :– प्राचीन भारतीय इतिहास मे मृन्मूतियों का महत्वपूर्ण स्थान है । ईसा पूर्व 3000 वर्षों से आज तक इस का प्रयोग होता रहा है । ये मृन्मूतियां विभिन्न उद्देश्यों के लिए बनाई जाती थी । इनमें कुछ घरेलू उपयोग के लिए कुछ धार्मिक कार्यों के लिए तथा कुछ केवल सजावट के लिए बनाई जाती थी । जबकि बडी संख्या में इनका उपयोग बच्चों के खिलोनों के लिए किया जाता था । मिट्टी सर्वसुलभ एवं लोचयुक्त होने के कारण इसको इच्छित आकार प्रदान करना सरल रहा । इसी से यह प्राचीन काल से कलाभिव्यक्ति का एक प्रमुख माध्यम रही है ।

प्रस्तावना :– नौरंगाबाद हरियाणा के भिवानी जिले के अंतर्गत आता है । इसकी भिवानी जिला मुख्यालय से दूरी लगभग 10 किलोमीटर है । यह गांव भिवानी –दिल्ली राजमार्ग पर स्थित है । यह स्थल या गांव सरकार की नजर में सन् 1980 में आया था । तब वर्षा ऋतु के दौरान धरातल पर कुछ सिक्के मिले जिनसे बच्चे खेल रहे थे । इनमें से बहुत से सिक्के कुषाण काल तथा यौधेय काल के थे । 1985 में इस खण्डहर को सरकार ने अपने अधीन लेकर पुरातत्व विभाग को सौंप दिया । इस स्थल का विधिवत् उत्खनन पी0बी0एस0 सेंगर महोदय ने 2000–2001 में करवाया । उत्खनन से यहां से कुषाण, यौधेय व गुप्तकालीन अनेक मृन्मूतियां मिली हैं । इन्हीं मृन्मूतियों का अध्ययन करना ही इस शोध–पत्र का मुख्य उद्देश्य है ।

चतुर्भुज विष्णु :– यह मूर्ति विष्णु देवता की प्रतीत होती है । इस सुन्दर और दुलर्भ मृन्मूर्ति में विष्णु के सिर पर मुकुट, कानों में कुण्डल,सिर के पीछे प्रभामण्डल, गले में कण्ठाहार, हाथों में कडे तथा पांच बडे फूलों से युक्त वैजयन्ती माला दिखाई गई है । उपर के दाहिने हाथ में कमल पुष्प नीचे से दाहिनी हाथ में गदा तथाा गदा के नीचे गदा–देवी बनी हुई है । उपर के बांये हाथ में शंख, नीचे के बायें हाथ में चक्र तथा उसके नीचे चक्रपुरूष प्रदर्शित है । कटि से घुटनों तक लहरदार धोती पहने हुए है । यह मृन्मूर्ति कुछ घिसी हुई होने पर भी सौन्दर्यपूर्ण लगती है । शंख चक्र और गदा युद्धोपकरणों के प्रतीक हैं । शत्रुओं पर विजय पाने के लिए इन शस्त्रों का प्रयोग किया जाता है । शंख से युद्ध का आहवान और समाप्ति तथा चक्र और गदा से शत्रु का हनन करके युद्धोपरान्त शान्ति, सौन्दर्य और स्वच्छता हो जाने का प्रतीक कमल है । ये सदा चलने वाली परम्परा के प्रतीक हैं । श्री विरजानन्द देवकरणि के अनुसार चतुर्भुज से अभिप्राय है शासक को राज्य की रक्षा हेतु–पैदल, रथ, घोडे और हाथियों से युक्त चतुरंगिणी से युक्त रहना चाहिए जिन्हें देव मानकर मूर्तियों के द्वारा पूजा जाता है ।

महिषासुरमर्दिनी :–यह मृन्मूर्ति नवीन प्रतिकृति नौरंगाबाद से मिली है । इसमें ऑख और मुंह मोटे–मोटे दिखाये गये हैं । दायें हाथ में त्रिशूल से महिषासुर राक्षस को मार रही है तथा दायें पैर से राक्षस को कुचलता हुआ दिखाया गया है । बायां हाथ मोडा हुआ है । गले में माला धारण की हुई है । बालों में आभूषण दिखाई दे रहे हैं । दोनों हाथों में चार–चार कंगन भी शोभायमान हैं [1]।

नौरंगाबाद से एक महिषासुमर्दिनी की मूर्ति बनाने का सांचा भी मिला है । इसमें देवी के चार हाथ प्रदर्शित हैं । चार हाथों का अभिप्राय है सामान्य शक्ति से चार गुणा अधिक सामर्थ्य रखना । इस सांचे में बनी महिषासुर मर्दिनी देवी की मूर्ति की नई मृन्मूर्ति भी मिली है जिसके दायें हाथ में त्रिशूल है, जिससे महिषासुर को मारा जा रहा है । आधी मृन्मूर्ति खण्डित हो चुकी है [2]।

सूर्य की मूर्ति :—यह मृन्मूर्ति सूर्य की है जो नौरंगाबाद से मिली है । इसका आकार 9×9.2 सैंटीमीटर है । प्रतिमा के सिर पर मुकुट तथा गर्दन के दोनों ओर पत्तों के आकार के दो आभूषण हैं । कान गले तथा छाती पर भी आभूषण और माला प्रदर्शित हैं । आंखें खुली हुई हैं । इसके दोनों हाथों में कमल का एक—एक पुष्प है । नाभि से नीचे की मूर्ति खण्डित हो चुकी है [3]।

नौरंगाबाद से अनेक संख्या में कुबेर की मृन्मूर्तियां प्राप्त हुई हैं । कुबेर को धन का देवता माना गया है । भागवत पुराण मे कुबेर का नाम धनद धन देने वाला मिलता है । उरूचरितम में धनद के लिए धनपाल नाम व्यक्त हुआ है । कुबेर की माता का नाम पुराणों में इलाबिला लिखा है । यहां से मिली ज्यादातर मूर्तियों में भारी उदर वाले कुबेर दिखाये गये हैं । कण्ठ में माला तथा कुछ मूर्तियों में पीछे की ओर अधोभाग में मेखला में टंगी कौपीन प्रदर्शित है [4]।

बालक की मूर्ति :— नौरंगाबाद से झुनझुना या शंख लिए हुए नंगे लेटे हुए मोटी आंखों वाले बालकों की मृन्मूर्तियां मिली हैं जिनका शरीर अत्यन्त पुष्ट है जो दायें हाथ को दाहिनी जंघा पर टिका कर बायें हाथ में झुनझुना लिए हुए हैं । कण्ठ में तीन लडियों वाला हार, दाहिने हाथ में दो कडे, बायें हाथ में एक कडा, कटि में रत्नजडित मेखला तथा पैरों में एक—एक कडा धारण किए हुए हैं । मृन्मूर्ति के उपरी भाग में दोनो ओर एक—एक छिद्र है जो धागा बांधकर लटकाने के लिए है । यह मृन्मूर्ति सांचे में ढली हुई है [5]। दूसरी मूर्ति आधी खण्डित है । जो काले रंग की है । इसकी मिट्टी मोटी—मोटी आंखें, बडे—बडे कान, गले में माला दिखाई गई है । दायें हाथ में शंख लिया हुआ है । इसके हाथों में दो—दो कडे हैं ।

झुनझुने की मृन्मूर्ति :— नौरंगाबाद से झुनझुने की एक मृन्मूर्ति प्राप्त हुई है जो अन्दर से खोखला है । इसे मुख भाग में सिंह पर सवार वीर यौद्धा दाहिने हाथ में वज्र लेकर सिंह पर वार करते हुए चित्रित है । आकृति का पूरा भाग सिंह का है लेकिन उसका मुख मगरमच्छ का बनाया गया है । जो उसके उपर सवार पुरूष के दायें हाथ को खाने का प्रयास कर रहा है । मकर का जबडा खुला हुआ है जबकि उस पर सवार यौद्धा अपने दायें हाथ में वज्र लिए

उस पर प्रहार करने की मुद्रा में है [6]। बायें हाथ से सिंह की पूंछ को दबाकर अपना यही हाथ सिंह के बायें पुट्ठे पर टिकाया हुआ है । मगरमच्छ के सिर के नीचे की ओर से झुनझुना कुछ टूटा हुआ है । यौद्धा और सिंह के चारों ओर टेडी मेडी रेखाओं से सुन्दरता की गई है । धागा बांधकर लटकाने के लिए उपर की ओर एक छिद्र बना हुआ है । झुनझुने के पृष्ठ भाग के मध्य में बने कमल पुष्प को चारों ओर से अनेक आकार की आडी तिरछी रेखाओं से चित्रित किया गया है । इसके उपर लाल आभा वाले चमकीली पालिश की हुई है । यह कला का अति सुन्दर प्रतीक है [7]।

एक अन्य झुनझुना और नौरंगाबाद से मिला है । इसमें मिट्टी की पकी हुई छोटी–छोटी गोलियां अभी तक विद्यमान हैं । इस झुनझुने को हिलाने पर झन–झन की आवाज आती है । झुनझुने के दोनों पक्षों की तरफ बिन्दु तथा आडी–तिरछी रेखाओं से सुन्दरता प्रदान की गई है । धागा बांधकर लटकाने के लिए उपर की ओर इसमें भी छिद्र बना हुआ है [8]।

कछुए की आकृति में बने इस झुनझुने क मुख टूटा हुआ है । इसकी पीठ पर बाईं ओर वामावर्त स्वास्तिक चिन्ह तथा दायीं ओर दक्षिणावर्त स्वास्तिक चिन्ह उतकीर्ण किया गया है । जैसे कछुए की पीठ पर धारियां होती हैं उसी प्रकार इसकी पीठ पर भी धारियां बनाई गई हैं [9]।

नारी–मूर्तियां – यह मृन्मूर्ति नौरंगाबाद से प्राप्त हुई है । यह मृन्मूर्ति उभयतो दर्शनीय है अर्थात् इसका अग्र भाग तथा पृष्ठ भाग दोनों दिखाई गए हैं । अग्र भाग में दोनों हाथों से वक्षःस्थल को वसन से अनावृत करते हुए दिखाया है । कटि पर दो लडियों की माला के नीचे धोती पहनी हुई है जिसके सामने दोहरी पट्टी चुन्नट टंगी हुई है । इसके पृष्ठ भाग मे नितम्बों से नीचे की ओर तथा ऐडियों से उपर की ओर घुटनों तक नाल संहिता एक कमल कलिका बनी हुई है [10]। गले में कण्ठाहार है ।

एक अन्य मूर्ति भी नौरंगाबाद से प्राप्त हुई है । इसका आकार 12.5×4.75×3.5 सैंटीमीटर है । माथे पर तीन लडियों वाला आभूषण धारण किया हुआ है । कानों में कुण्डल है

। दायें हाथ में फूल लिये हुए तथा हाथ उपर की तरफ मुडा है । बायां हाथ सीधा शरीर से चिपका हुआ है । पेट पर नाभि भी दिखाई गई है । दोनों वक्षःस्थलों स्तनों का उभारा दर्शनीय है । हाथ चूडियों से भरा हुआ है ।

इस श्रेणी की अन्य मृन्मूर्ति, जिसका आकार 10.7×4×2 सैंटीमीटर है । कानों में कुण्डल, सिर पर वस्म बंधा हुआ है । मोटा कपडा पहने हुए बायें हाथ से इसको पकड रखा है तथा दाहिने स्तन के पास दायें हाथ में फूल है । दोनों हाथों में चूडियां हैं । घुटनों से नीचे मृन्मूर्ति खण्डित हो चुकी है ।

नौरंगाबाद से प्राप्त मृन्मूर्ति के मुख का नीचे का होंठ मोटा तथा उपर का पतला है । चेहरे पर अलग–अलग रंग किये गए हैं । हरा, नीला तथा लाल रंगों का मिश्रण दिखाई देता है ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्राचीन काल में मृन्मूर्ति उस समय के समाज की भावनाओं को व्यक्त करने का सबसे सरल व अच्छा साधन था ।

संदर्भ :–

1. विरजानन्द दैवकरणि, नौरंगाबाद बामला की मृन्मूतियां (गुरूकुल झज्जर : हरयाणा प्रान्तीय पुरातत्व संग्रहालय, 2001), फलक–4
2. विरजानन्द दैवकरणि, नौरंगाबाद ((बामला) की मृन्मूतियां, फलक–3, पृ0–20
3. देवेन्द्र हांडा, स्कल्पचर फ्रॉम हरियाणा : आईकनोग्राफी एण्ड स्टाईल, पू0– 18
4. विरजानन्द दैवकरणि, नौरंगाबाद की मृन्मूतियां, पृ0– 21
5. विरजानन्द दैवकरणि, नौरंगाबाद की मृन्मूतियां, पृ0– 21
6. योगानन्द शास्त्री, प्राचीन भारत में यौधेय गणराज्य, पृ0– 187
7. विरजानन्द दैवकरणि, नौरंगाबाद की मृन्मूतियां, पृ0– 22
8. विरजानन्द दैवकरणि, नौरंगाबाद की मृन्मूतियां, पृ0– 22
9. विरजानन्द दैवकरणि, नौरंगाबाद की मृन्मूतियां, पृ0– 22

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

10. विरजानन्द दैवकरणि, नौरंगाबाद की मृन्मूतियां, पृ0– 22